[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3456

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सिने संगीत में शास्त्रीय प्रयोग

पंकज चोपडा
लेक्चरर, परफॉर्मिंग आर्ट विभाग
स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्वविद्यालय मेरठ 250005 (उ. प्र.)

सृष्टि के आरम्भ से मानव आनंद की खोज में भटकता रहा है। इसकी कल्पना, इस सृष्टि के साथ तालमेल स्थापित करती रही है और यह कल्पना ही, कलात्मक प्रवृत्ति को मूर्त रूप देने की कोशिश करती रही है। प्रकृति के सौन्दर्य को स्थायित्व प्रदान करते के लिए ललित कलाओं का जन्म हुआ और ललित कलाओं में सबसे ऊँचा स्थान माना गया है, संगीत का। डॉ0 निशा रावत जी के शब्दों में संगीत विश्व का नैतिक विधान है,यह मानव मस्तिष्क में नवीन रंग और भावनाओं में रंगीन उडान भरता है। संगीत निराशा के प्रांगण में आनन्द का प्रपात प्रवाहित करता है तथा विश्व के प्रत्येक पदार्थ मे जीवन और उत्साह को मुखरित करता है। आजकल सुबह से शाम तक व कभी–कभी चौबीस घंटे व अनवरत संगीत की गूँज हमारे कानों में अनेक रूपों में पडती रहती है। कोई भी स्थान हो या कोई भी कार्य हो सब जगह आकाश की धुन्ध की भाँति संगीत का प्रसार होता रहता है।

हिन्दुस्तानी संगीत के मुख्य दो प्रकार है –शास्त्रीय संगीत और भाव संगीत।साधारण तौर पर शास्त्रीय संगीत उसे कहते हैं जो शास्त्र के नियमानुसार प्रस्तुत किया जाए और भाव संगीत उसे कहा जा सकता है, जिसे कोई भी व्यक्ति सहज भाव में गुनगुना उठे। दोनों में अन्तर सिर्फ इतना है कि शास्त्रीय संगीत ने विभिन्न राग–रागिनियों की सुसज्जित पोशाक पहन रखी है और भाव संगीत केवल ध्वनि और लय के सहारे मस्ती भरे अन्दाज में मुक्त भ्रमण कर रहा है। भाव संगीत को मुख्य तीन भागों में विभाजित किया जात सकता है –

(1) चित्रपट संगीत (2) लोक संगीत (3) भक्ति संगीत

चित्रपट संगीत अथवा फिल्मी संगीत जिसे हम आज बॉलीवुड म्यूजिक के नाम से पहचानते हैं, इसका स्वर्ण युग आज से लगभग आठ दशक पूर्व प्रारम्भ हुआ जब भारतीय सिंने संगीत की पहली फिल्म 'आलम आरा' सन् 1931 में हमारे सामने आयी। इससे पूर्व भारतीय सिनेमा में मूक चित्रपट हुआ करते थे। मूक फिल्मों मे प्रदर्शन के समय एक व्यक्ति समझाता रहता था कि दृश्य में अमुक चीज दिखाई जा रही है। एक हारमोनियम– वादक और एक तबला–वादक लोगों का मनोरंजन करने के लिए रहता था। वे दृश्य के भाव के अनुसार वादन करके पार्श्व–संगीत की कमी पूरी कर देते थे।

आरम्भ में भारतीय शास्त्रीय संगीतकार अथवा कोई घरानेदार गायक ही फिल्म संगीत की रचना करते थे। यही कारण था कि शास्त्रीय संगीत आरम्भ से ही सिने संगीत को खूबसूरत बनाता रहा। इन सभी संगीत–निर्देशकों की रचनाएँ शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित होती थी। सन् 1931 से 1941 तक इसी प्रकार विविध रंगों में घरानेदार फिल्म–संगीत के प्रयोग होते रहे। बॉम्बे–टॉकीज से सरस्वती देवी व एस0 एन0 त्रिपाठी शुद्ध रागों की बंदिशें देते थे, तो प्रभात से मराठी नाट्य–संगीत प्रस्तुत होता था। बंबइया फिल्मों में गजल, कव्वाली, ठुमरी एवं पारसी रंगमंच की धुन अधिक थी। सन् 1941 में लाहोर के पंचोली–स्टूडियों से 'खजांची' फिल्म मे गुलाम हैदर ने फिल्म–संगीत को एक नया मोड दिया। तबले की जगह ढोलक ओर घडे का प्रयोग तथा क्लारनेट, हारमोनियम की जगह ट्रंपेट और हवाइन–गिटार का प्रयोग होने लगा। धुनों में पंजाबी रंग उभरा। गुलाम हैदर के इस नए संगीत के मोड़ से प्रभावित होकर खेमचन्द्र प्रकाश राजस्थानी लोक–धुनों पर आधारित रचनाएँ करने लगे तो उधर पंजाब में पंजाबी लोक–गीत हीर, जट्टा आदि पर आधारित फिल्म–संगीत दिया जाने लगा तो इधर नौशाद ने उत्तर प्रदेश की लोक–धुनो को अपने फिल्म–संगीत का आधार बनाया।

'आलम आरा' के बाद फिल्मों में नृत्य और गति की परम्परा चलती रही, लेकिन सभी कलाकारों को खुद गाना पडता था। ऐसे नायक और नायिकाएँ चमकने लगे, जो अभिनय के साथ–साथ संगीत मे भी कुशल होते थे; जैसे– अशोक कुमार, देविकारानी, खुरशीद, के0सी0डे0, शाहू मोदक, फीरोज दस्तूर, नूरजहाँ, सुरैया, सहगल आदि। अभिनय ओर गायन में कुशल होने के कारण इन सब कलाकारों की जबरदस्त ख्याति हुई।

जब बोलती फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो कथा, संवाद और संगीत तीनों शक्तिशाली होने लगे। लोक– संगीत और शास्त्रीय संगीत के विविध रूपों से फिल्मों में जान पड गई। एक–एक फिल्म में दस–दस गति आने लगे। अधिकतर फिल्मों में गीत

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शास्त्रीय संगीत पर आधारित होते थे। कुछ फिल्में तो सिर्फ अपने अच्छे संगीत के कारण सफलता प्राप्त करती थी। जिस फि की कथा और संगीत दोनों अच्छे होते थे, उसकी सफलता तो नये आयाम छूती थी।

संगीत का निर्माण करने वाले संगीतकार भी बढने लगे। अलग–अलग प्रांतों से जो संगीत–निर्देशक फिल्मों में आए, उन सबने अपने–अपने घराने और अपने–अपने प्रान्त के संगीत से फिल्मी धुनों को चटकीला बनाया। इससे फिल्म संगीत इतना समृद्ध होता गया कि छोटे–छोटे बच्चे भी उसे गलियों में गाने लगे। एच0एम0वी0, कोलम्बिया, हिन्दुस्तान और यंग–इण्डिया कम्पनी के डिस्क–रिकार्ड लाखों की संख्या में बिकने लगे। यह वह दौर था जब फिल्म संगीत के जरिए शास्त्रीय संगीत जन–जन के कानों तक पहुँच रहा था। ध्रुवपद, धमार, तराना, कव्वाली, ग़ज़ल, दादरा, भजन और लोकगीत फिल्मी दायरे में आकर ऐसे सज उठे कि लोग उन्हें सुनकर झूम उठे।

गायकों के साथ–साथ शास्त्रीय संगीत का ज्ञान रखने वाले संगीत निर्देशकों की दुनिया भी बढने लगी। झंडे खाँ, सरस्वती देवी, गुलाम मुहम्मद, एस0एन0 त्रिपाठी, कृष्ण राव चोणकर, आर0सी0 बड़ाल, शंकरराव व्यास, नौशाद अली, रोशन, खेमचन्द प्रकाश, एस0डी0 बर्मन, मदन मोहन, सलिल चौधरी, सी0 रामचन्द्र, हुस्नलाल–भगत राम, शिवराम, ओ0पी0 नय्यर, तिमिर बरन, शंकर–जयकिशन, बसन्त देसाई, जमालसेन, कल्याण जी, आनन्द जी, रवि, लक्ष्मीकान्त– प्यारे लाल, आर0डी0 बर्मन, अनिल विश्वास, सुरेन्द्र कोहली, उषा खन्ना, जी0एस0 कोहली, दत्ताराम, एन0 दत्ता, अजीत मर्चेन्ट, हृदयनाथ मंगेशकर, हेमन्त कुमार, लच्छी राम, सतीश भटट, आदित्य नारायण, रामलाल, रविन्द्र जैन, सोनिक–ओमी, जयदेव, खैयाम, इकबाल कुरेशी, जे0पी0 कोशिक, रघुनाथ सेठ, विजयराघव राव, इत्यादि संगीत–निर्देशकों का नाम भी खूब हुआ। अनेक गति उनकी विविध संगीत शैलियों और रचनाओं के कारण लोकप्रिय हुए। जब फिल्मों मे साउण्ड ट्रेक जुड गया, तो अभिनेता– अभिनेत्री के बजाय, अच्छे गायक–गायिकाओं से गीत गवाए जाने लगे और पार्श्व–गायन की एक नई विधा ने जन्म लिया। फिर तो अमीर बाई कर्नाटकी, ज़ोहरा बाई, दुर्रानी, जूथिका राय, शमशाद बेगम, लता मंगेशकर, गीता दत्त, आशा भोंसले, मुहम्मद रफी, मुकेश, मन्नाडे, सुमन– कल्याणपुर, सुरैया, मुबारक बेगम, तलत महमूद, सी0एच0 आत्मा, हेमन्तकुमार, महेन्द्रकपूर, उषा मंगेशकर, सुलक्षणा पंडित, सुरेश वाडकर तथा येशुदास जैसे प्राचीन और अर्वाचीन गायक–गायिकाओं के योग से फिल्म का संगीत अत्यन्त कर्णप्रिय और प्रभावशाली हो गया। गायकों के कंठ–गुण के आधार पर शास्त्रीय संगीत–रचनाएँ निर्मित होने लगीं। अभिनेता–अभिनेत्रियों का चुनाव, संगीत की कोई अडचन न होने के कारण अब उच्च स्तर पर होने लगा। फलस्रूप अभिनय और गायन दोनों का स्वतन्त्र रूप से अपूर्व विकास हुआ।

फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत का योगदान देने वाले अनेक संगीतज्ञ हुए जिनकी कर्ण प्रिय संगीत संरचनाएँ न सिर्फ संगीत के विद्वान श्रोताओं बल्कि जन साधारण के मानस पटल पर अंकित हुई । फिल्मों का प्रचार व प्रसार अधिक होने की वजय से ये शास्त्रीय संगीत जनसाधारण को भी आनन्दित कर सका। शास्त्रीय संगीत के प्रकाण्ड विद्वान जैसे पं0 भीमसेन जोशी, किशोरी अमोणकर, बडे गुलाम अली खाँ, चित्ता जगजीत सिंह, लक्ष्मीशंकर, निर्मला अरूण, गुलाम मुस्तफा खाँ, वाणी जयराम, डी0वी0 पलुस्कर, अमीर खाँ, मल्लिकार्जून, बाल गंधर्व, गोविन्दराव टेम्बे, दिलीप चन्द्र बेदी, मनहर बर्वे, विष्णु देव चटर्जी, पं0 लक्ष्मण प्रसाद, मुश्ताक अली खाँ, अमरनाथ, विनायकराव पटवर्धन, सरस्वती रानी, हीराबाई बड़ोदकर जैसे गायकों और पं0 रविशंकर, अली अकबर खाँ, पन्नालाल घोष, हरिप्रसाद चौरसिया, विलायत खाँ, रईस खाँ, रामनारायण, अब्दुल हलीम जाफर खाँ, शिवकुमार शर्मा, ब्रज नारायण, जरीन दारूवाला (शर्मा), अल्लारखा खाँ, करीम खाँ, बिस्मिल्लाह खाँ, सामता प्रसाद (गुदई महाराज) जैसे वादकों के योगदान से फिल्म संगीत का क्षेत्र निरन्तर सशक्त होता गया और यही कारण है कि वह आज लोक में व्याप्त होकर जन–जन का मनोरंजन कर रहा है।

पहली सवाक् फिल्म 'आलम आरा' से होकर आज तक लाखों फिल्मों बन चुकी हैं और कई लाख गाने रिकार्ड हो चुके हैं जिनमें सर्वाधिक संख्या लता मंगेशकर जी के गीतों की है इसलिए फिल्म–संगीत की समृद्धि और लोकप्रियता का प्रमुख श्रेय कोकिल कंठी लता मंगेशकर जी को हो जाता है। फिल्म संगीत में शास्त्रीय संगीत के उपयोग के अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते है। पाकीजा, बसंत बहार, तानसेन, बैजूबावरा, गूँज उठी शहनाई, झनक–झनक पायल बाजे, रानी रूपमती, नागिन, नवरंग, सरगम तथा नाचे मयूरी इत्यादि अनेक संगीत–प्रधान फिल्मों ने भारतीय संगीत–जगत पर अपना एक अमिट प्रभाव छोडा है। आज की फिल्मों में भी शास्त्रीय संगीत को आधार मानकर अनेक गीतों की रचना हो रही है। 'उमरावजान' देवदास, आजा नचले, रॉक स्टार तथा आशिकि–2 जैसी फिल्मों में कई गीत शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं और इन गीतों ने सफलता के नये कीर्तिमान स्थापित किए है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

अन्त में मैं बस यही कहना चाहूँगा कि आधुनिक युग में आज समाज अपने लोक–संगीत और शास्त्रीय संगीत के मूल स्वरूप को भूलता जा रहा है। फिल्मी गीतों के कुछ ऐसे उदाहरण भी सामने आते हैं जिसमें बेसिर–पैर की धुनों और अश्लील शब्दों के द्वारा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत व इसकी परम्परा को ठेस पहुँचाई जा रही है। ऐसे अश्लील गीत बनाने वाले संगीतकार व उन गीतो को सुनकर बढावा देने वाले श्रोता शायद पिज्जा–बर्गर खाते–खाते माँ के हाथ का खाना व देसी घी का स्वाद ही भूल गए हैं। परिवर्तन आवश्यक है। नये प्रयोग भी अवश्य होने चाहिए परन्तु समझदारी इसी में है जब हमे नशे में होने के बावजूद अपना घर व अपना देश याद रहें।

सन्दर्भ –

1 *'वसन्त', संगीत विशारद, प्रकाशकः संगीत कार्यालय, हाथरस, संस्करणः 2013*
2 *द्विवेदी, डॉ0 रमाकान्त, संगीत स्वरित, प्रकाशकः साहित्य रत्नालय,कानपुर, संस्करण : 2004*
3 *रावत, डॉ0 निशा, संगीत में नेट सफलता के पथ, प्रकाशकः संजय प्रकाशन, नयी दिल्ली संस्करणः 2010*
4 *श्रीवास्तव, पं0 हरिशचन्द्र, राग परिचय भाग–1, प्रकाशकः साउथ मलाका, इलाहाबाद, संस्करणः 2011*